ऑनलाइन ज्ञानरथ

गायत्री परिवार

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा एक संक्षिप्त जानकारी

ब्रह्मवर्चस द्वारा सम्पादित "पंडित श्रीराम शर्मा,दर्शन एवं दृष्टि" (2012) जैसे 474 पन्नों के विशाल ग्रन्थ पर आधारित

निवेदन

यह लघु पुस्तिका ब्रह्मवर्चस द्वारा सम्पादित “पंडित श्रीराम शर्मा,दर्शन एवं दृष्टि” (2012) जैसे 474 पन्नों के विशाल ग्रन्थ पर आधारित है। इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा की बहुत ही संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गयी है। अधिक जानकारी के लिए पाठक ब्रह्मवर्चस द्वारा सम्पादित पुस्तक के 60 पन्नों का अध्ययन कर सकते हैं।

इस पुस्तक को प्रस्तुत करने में लेखक ने अपनी समर्था अनुसार अत्यंत सावधानी बरती है, फिर भी अनजाने में त्रुटि होने की सम्भावना हो सकती है,पाठकों से निवेदन है कि किसी भी त्रुटि को हमें सूचित कर दें ताकि हम संशोधन कर सकें।

धन्यवाद्

भारतीय संस्कृति:

अंग्रेजी शासन के प्रारंभिक दौर में 18वीं सदी तक अंगरेजों ने लिखा है कि भारत के लोग समृद्ध हैं और संस्कृतिनिष्ठ हैं। लगभग 30-40 वर्ष में ही अंग्रेज़ों की सोच में इतना परिवर्तन हो गया कि लार्ड मैकाले ने 1835 फरवरी में भारतीय संस्कृति की रीढ़ तोड़ने के लिए ब्रिटिश पार्लियामेंट में प्रस्ताव पेश किया जो निम्नानसार है :

2 फरवरी 1835 को ब्रिटिश संसद मैलार्ड मैकाले का सम्बोधन (अनुदित)

“मैंने एक ओर से दूसरी ओर तक सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया है और एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं देखा जो भिखारी है, चोर है। मैंने इस देश में ऐसी संपदा, ऐसे उच्च नैतिक मूल्यों वाले प्रतिभा के लोग देखे हैं कि मैं नहीं सोचता कि हम कभी भी इस देश को जीत पाएँगे, जब तक हम इस देश की उस

रीढ़ की हड्डी को ही न तोड़ दें, जो इसकी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत है। इसलिए मैं प्रस्तावित करता हूँ कि हम इस देश की प्राचीन शिक्षा पद्धति या संस्कृति को बदल दें क्योंकि यदि भारतीय यह सोचने लगें कि अंगरेज एवं वह सब कुछ जो विदेशी हैं, अच्छा है, हमारे अपने से बहुत बड़ा है, तो वे अपने आत्मगौरव, अपनी भारतीय संस्कृति को खो देंगे और वे वह हो जाएंगे जो हम उन्हें चाहते है। एक अधीनस्थ और हमारे द्वारा शासित देश "

इस सम्बोधन के पश्चात् भारत में सिलसिलेवार पश्चिमी सभ्यता का तेज़ी से फैलना तथा ब्रिटिश शासन द्वारा ग्राम पंचायत व्यवस्था, कुटीर उद्योग एवं प्राचीन पद्धति तथा पांडुलिपियों को समूल ध्वस्त करने का प्रयास आरम्भ हो गया था ।

इस लघु पुस्तिका के माध्यम से हम सब यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि हमारी भारतीय संस्कृति, कला, साहित्य ने किन-किन देशों में अपना प्रभाव आज भी अक्षुण्ण बनाए रखा है हमें अपनी संस्कृति पर गौरव का अनुभव होना चाहिए ।

हमने पहले भी बहुत बार लिखा है कि लार्ड मैकाले से सम्बंधित शिक्षा नीति के बारे में कुछ न कहें तो ही उचित होगा क्योंकि इस नीति के Favour में और Against इतना कुछ उपलब्ध है कि कोई भी अध्ययन करके अपनी शंकाएं दूर कर सकता है लेकिन हम इतना अवश्य कह सकते हैं कि लार्ड मैकाले की बात केवल 200 वर्ष पुरानी है और 200 वर्ष का समय किसी संस्कृति के मूल्यांकन के लिए बहुत ही कम समय है, जिन तथ्यों का निम्नलिखित पंक्तियों में वर्णन किया गया है, वोह तो हज़ारों लाखों वर्ष पुराने हैं।

यजुर्वेद में कहा गया है – "सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा'
अर्थात हमारी देव संस्कृति का विश्व में सर्वप्रथम उदय भारत
में हुआ । इसीलिए यह भारतीय संस्कृति भी कहलायी।
इसका Evolution हिमालय में हुआ, जिसे ब्रह्मवर्त,
उत्तराखण्ड अथवा उत्तरांचल कहा जाता है। यहीं से इस
संस्कृति का संदेश हमारे ऋषि- मनीषियों द्वारा पूरे विश्व में
ले जाया गया जिससे यह विश्व संस्कृति बनी और
आध्यात्मिक रूप से हमारा देश "जगद्गुरु" कहलाया ।

हमारी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर इतनी समृद्ध है कि उसने
एक समय समस्त विश्व को अपने रंग में रँग लिया था ।
इतिहासकारों के अनुसार एक समय अमेरिका भारत का
एक उपनिवेश था, जहाँ शिव, गणेश, इंद्र, सूर्य, अग्नि आदि
देवी देवता पूजे जाते थे ।

1.पेरू: (साउथ अमेरिका)

लगभग 100 वर्ष पूर्व की ही बात है कि 1927 में अमेरिकी तथा मिश्र की पुरातत्व विभाग की टीम ने संयुक्त रूप से पेरू में (जो साउथ अमेरिका का एक देश है) खुदाई की जिसमें एक ऐसा शिव त्रिशूल मिला जिसकी लम्बाई 850 फुट है। इसी के साथ 20 टन भारी और 24 फीट ऊँचा एक शिवलिंग भी मिला जिस पर ग्रह-नक्षत्रों की अंतर्राक्षीय स्थितियाँ अंकित हैं। कालगणना के अनुसार इनका कालखंड 27000 वर्ष पूर्व का माना गया।

2.मैक्सिको भी साउथ अमेरिका का ही एक देश है। इस देश में की गयी पुरातत्वीय खुदाई में एक सूर्य मंदिर के अवशेष मिले जिसमें 10 टन भारी सूर्य-प्रतिमा एवं तीन कतारों में उपलब्ध 48 प्रतिमाएँ भी उस काल की, भारतीय कला एवं संस्कृति की साक्षी हैं। मैक्सिकों में प्रति वर्ष ‘रामसितवा’

त्यौहार भारी हर्षोल्लास के साथ अब भी मनाया जाता है जिसमें रामलीला की झांकियाँ निकाली जाती हैं। मैक्सिको के ही प्राचीन मंदिर “कोपन” की दीवारों पर हाथी पर सवार महावत के चित्र, वासुकि नाग, तक्षक नाग, सूर्य आदि भारतीय चित्रकला की अमिट छाप है।

3.साउथ अमेरिका का ही एक और देश है बोलीविया, महाभारत के अनुसार इस देश में भी सूर्यवंशी राजाओं का राज्य था। आस्ट्रेलिया में भी भारत से मिलते-जुलते रिवाज आज भी वहाँ की मूल जातियों में विद्यमान हैं।

4.इसी प्रकार मिश्र के प्रसिद्ध नगर ग़िज़ा में स्थित पिरामिड के भीतर वहाँ के राजाओं के शवों के सिरहाने रखे स्वर्ण पत्र पर भगवान सूर्य का चित्र अंकित है। यह शव कई वर्ष पूर्व यहाँ सुरक्षित रखे गए थे। सूर्य की ओर जाते हुए एक गाय का चित्र है जिसकी पूँछ पकड़े हुए एक मानव की

आकृति अंकित है, जो गाय की पूँछ पकड़कर वैतरणी पार करने का संदेश देती दृष्टिगोचर होती है। कहा जाता है कि यहाँ अतीत में सूर्यवंशी राजाओं का राज्य था तथा बाद में मय संस्कृति विद्यमान थी ।

5.जर्मनी के प्रसिद्ध इतिहासकार मैक्समूलर ने वेदों का अनुवाद करते हुए लिखा है – 'भारत ही वह देश है जिसने विश्व को 18 विद्याओं तथा 64 कलाओं का प्रकाश प्रदान किया है, जिसने ईश्वर और जीव संबंधी समस्त समस्याओं को सुलझाया है, जिसने अपने लोगों को हमेशा यही सिखाया है कि दुःख सहना देवत्व है और दुःख देना आसुरी प्रवृत्ति है। यही वह देश है जोअच्छे कार्य में विश्वास रखता है, अच्छी जाति में नहीं।

भगवान बुद्ध का संदेश तथा बौद्धकालीन संस्कृति की विरासत आज भी पूरे मध्य एशिया, चीन, जापान, श्रीलंका,

मलेशिया, जावा, सुमात्रा आदि देशों में जीवंत देखी जा सकती है।

6.हर्षवर्धन के लगभग एक हजार वर्ष उपरांत सोलहवीं सदी के अंत में शहंशाह अकबर के वजीर अबुलफजल ने “आइने अकबरी” में लिखा है कि हिंदू लोग धार्मिक, सहनशील, नम्र, न्यायप्रिय, त्यागी, सत्यनिष्ठ, कृतज्ञ, प्रभु-भक्त तथा अपरिग्रही होते हैं। अपरिग्रही का अर्थ है जो किसी से कुछ भी ग्रहण नहीं करते, दान को अस्वीकार करते हैं, लेने में नहीं, देने में विश्वास करते हैं, त्याग का जीवन व्यतीत करते हैं एवं जीवन-निर्वाह के लिए न्यूनतम ज़रूरतों से ज़्यादा कुछ भी नहीं लेने में विश्वास करते हैं।

7.इण्डोनेशिया: इन्डोनेशिया में अनेक नगरों के नाम भारत के नगरों जैसे ही हैं जैसे अयोध्या, तक्षशिला, हस्तिनापुर, गांधार, विष्णुलोक, लवपुरी आदि। यहां की राजधानी का

नाम जकार्ता वस्तुतः यज्ञकर्ता/ जयकर्ता से ही लिया हुआ लगता है । विष्णु वाहन गरुड़ इण्डोनेशिया निवासियों का श्रद्धापात्र है, उनके नाम से "गरुड़ एयरवेज कम्पनी" चलती है। "गरुड़ पर सवारी कीजिए-गरुड़ गति से प्रवास करिए" जैसे विज्ञापन बाँटे व चिपकाए जाते हैं। गरुड़ नाम के साथ ही विमान पर logo भी गरुड़ ही बना है। इण्डोनेशिया में रामलीला बहुत लोकप्रिय है और यह क्रमशः अधिकाधिक कलात्मक होती गई है। यहाँ की संस्कृति में रामायण के लिए गहरी श्रद्धा है। न्यूयार्क में एक इण्डोनेशियाई के होटल का नाम रामायण होटल' है।

8.सुमात्रा: सुमात्रा का प्राचीन नाम 'श्रीविजय' था । सुमात्रा मैं पाए जाने वाले प्राचीन खंडहरों में से अधिकांश शिव मंदिर हैं। यहाँ अभी भी रामसीता, हनुमान, रुद्रशिव, भवानी दुर्गा के मंदिर हैं और यथावत् पूजा होती है।

9.बर्मा (आजकल का म्यान्मार) : इस क्षेत्र में विशाल विष्णु मंदिर जिसकी दीवारों पर दशावतारों की प्रतिमाएँ अंकित हैं। हिंदू देवी-देवताओं और रीति-रिवाजों का अनुकरण होता है।

10.श्रीलंका: राजतंत्र चलाने वाले विज्ञान-धर्म गुरु तथा व्यवसायी भारतीय वंशधर ही रहे थे। उत्तर भारत के भारतीयों ने ही इस द्वीप को बसाया। धर्म प्रचारक बौद्ध संघमित्रा और महेन्द्र पहुँचे थे। भारतीय धर्म ग्रंथों रामायण आदि में स्वर्गगिरि – लंका के विषय में वर्णन मिलता है।

11.कम्बोडिया: साउथ एशिया के देश कम्बोडिआ में इतिहासकार केण्टलई और ली. टाओ युआन के कथनानुसार ईसा की तीसरी शताब्दी में यहाँ हिंदू राज स्थापित हो चुका था। सोमा (कम्बोडियन) और कौडिन्य (भारतीय) से उत्पन्न पुत्र कम्बोडिया का शासक बना। वर्मन बंधु सभी इसी वंश के

थे। कम्बोडिया का प्राचीन नाम कम्बुज था। कम्बु लोग अपने को मनु की संतान मानते हैं। श्रीबागची के द्वारा प्राप्त शिलालेखों से कम्बोडिया के प्राचीन निवासी भारतीय नस्ल के थे। कम्बोडिया की प्राचीन भाषा भारतीय मुण्ड एवं खस भाषा से बहुत कुछ मिलती है। भाषा में संस्कृत शब्दों की भरमार है तथा 14वीं सदी तक संस्कृत राजभाषा रही। साहित्य में रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों की कलाओं का बहुल्य है तथा पूजा, उपासना, कर्मकाण्ड, प्रथा,परम्पराएँ भारत के समान हैं जिनका प्रमाण मंदिरों, चित्रों, मूर्ति तथा शिलालेखों से मिलता है। लोकप्रिय शासकों में जयवर्धन, यशोवर्धन माने जाते हैं। इनके शासन काल में 100 महाविद्यालय उच्च कोटि की शिक्षा, पुस्तकालय तथा मंदिर थे। सांस्कृतिक दृष्टि से यह भारत के बहुत निकट है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा :

1994 से आरम्भ हुई राष्ट्रिय स्तर की इस परीक्षा से क्या-क्या परिणाम निकल कर आए, गुरुदेव ने निम्लिखित शब्द क्यों लिखे होंगें :

“है नहीं तलवार अपने हाथ में तो क्या हुआ, हम कलम से ही करेंगे सिरफिरों के सिर कलम”

परम पूज्य गुरुदेव की वेदना तो हम समझ ही सकते है जिन्होंने इस परीक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का प्रयास किया। जब हमने इस तथ्य का विश्लेषण और रिसर्च करने का प्रयास किया तो एक ही बात हमारे अंतःकरण में उठी कि 200 वर्ष पूर्व कही हुई बात को हम सही/ गलत तो तब कहें जब हम यह प्रभाव आज भी अपने आस पास, अपने परिवारों में, यहाँ तक कि गायत्री परिवारों में न देख रहे हों। अंग्रेजी बोलना और अपनी

मातृभाषा को नकारना एक फैशन बन चुका है। बाल संस्कार शालाओं में बच्चों और युवाओं को हिंदी पढ़ने/पढ़ाने का कोई प्रयास नहीं किया जाता, यज्ञ कर्मकांड करते तो हैं लेकिन अंग्रेजी में। मातृभाषा की classes तो ज्वाइन की हुई हैं लेकिन केवल फैशन के लिए। परिवारों में माता पिता ,नन्हें बच्चों के साथ यां बच्चे आपस में अंग्रेजी में बात करते हैं, शाम को सैर करते अगर कोई मातृभाषा बोलता मिल जाये तो वोह uncivilized है। तो स्वयं ही उत्तर मिल रहा है कि लार्ड मैकाले की बात सच है कि झूठ। यह बात विदेशों में बसे भारतीओं की ही नहीं है, भारतीय परिवार भी कुछ कम नहीं हैं।

हम अपने साथियों के करबद्ध प्रार्थना कर रहे हैं अगर किसी को हमारी बात से आघात हुआ हो तो हमें क्षमा कर दें।

संस्कारित बच्चे, आदर्श बच्चे ही आदर्श परिवार हैं, यह हम प्रतिदिन अपने ज्ञानरथ परिवार में अनुभव कर रहे हैं।

आज पश्चिमी संस्कृति एवं सभ्यता का प्रवेश सिनेमा, टी.वी., इंटरनेट के माध्यम से घर के चौके तक हो गया । परम पूज्य गुरुदेव भारतीय संस्कृति के इस प्रभाव से अत्यंत व्यथित थे । उन्होंने लगभग 3400 पुस्तक-पुस्तिकाओं के माध्यम से लिखकर यह घोषित किया कि "हम उल्टे को उलट कर सीधा कर देंगे, है नहीं तलवार अपने हाथ में तो क्या हुआ, हम कलम से ही करेंगे सिरफिरों के सिर कलम" परमपूज्य गुरुदेव की इसी लेखनी को, उनके विचारों को जन-जन तक पहुँचाने, बच्चों-बच्चों तक पहुँचाने के लिए उन्हीं की चेतना के फलस्वरूप वर्ष 1994 में प्रथम बार भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन गायत्री शक्तिपीठ, भोपाल द्वारा किया गया। इस परीक्षा से सम्बंधित बेसिक इतिहास और उद्देश्य

जानना बहुत आवश्यक है l

गुरुदेव की अन्य योजनाओं की भांति इस योजना का भी मतस्यावतार बन कर विस्तार हो रहा है। किसी एक राज्य के शिक्षा बोर्ड की कार्यक्षमता कितनी होती है हम सब अनुमान लगा सकते है लेकिन यह विशाल राष्ट्रिय स्तर की योजना कैसे चल रही है, अवश्य ही किसी दिव्य शक्ति का हाथ है।

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा संचालित "अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा" भी इसी परीक्षा के साथ मिलती जुलती परीक्षा है। यह अलग परीक्षा है अतः आशा करते हैं कि किसी तरह का कोई confusion नहीं होगा।

ब्रह्मवर्चस द्वारा सम्पादित “पंडित श्रीराम शर्मा,दर्शन एवं दृष्टि” (2012) जैसे 474 पन्नों के विशाल ग्रन्थ पर आधारित यह पुस्तिका हमें भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को समझने में बहुत सहायक होगा।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का इतिहास एवं स्वरूप

परम पूज्य गुरुदेव की लेखनी को, उनके विचारों को जन-जन तक पहुँचाने, बच्चे बच्चे तक पहुँचाने के लिए उन्हीं की चेतना के फलस्वरूप वर्ष 1994 में प्रथम बार भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन गायत्री शक्तिपीठ, भोपाल द्वारा किया गया। डॉ. के.वी. पण्ड्या, डॉ. पाटीदार, डॉ. रमन परिवार, टण्डन परिवार तथा नायक परिवार के साथ प्रारंभ की गई। यह परीक्षा लगभग 20 हायर सेकेंडरी स्कूलों में आयोजित हुई, जिसमें लगभग 2000 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। वर्ष 1995 में यह परीक्षा भोपाल के 114 हायर सेकेंडरी स्कूलों की 9वीं से 12वीं की कक्षाओं के लिए आयोजित हुई जिसमें लगभग 7000 छात्र परीक्षा में बैठे। वर्ष 1995 में इस परीक्षा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना हुई कि परीक्षा में प्रत्येक शाला के प्रथम तीन छात्रों की मेरिट

सूची में लगभग 350 छात्रों के नाम लगभग 10 पृष्ठों में प्रकाशित हुए थे। भोपाल शक्तिपीठ के अधिकारी इस मेरिट लिस्ट को मध्य प्रदेश के प्रमुख अखबार “दैनिक भास्कर” में बोर्ड के परीक्षा परिणामों की तरह छपवाना चाहते थे, ताकि पूरे प्रदेश में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का विस्तार हो सके। भोपाल शक्तिपीठ के पास विज्ञापन देने के लिए समुचित राशि नहीं थी, अतः शक्तिपीठ की टीम अखबार के मालिक के पास गई। अधिकारीयों ने नपे-तुले शब्दों में निवेदन किया, “भाई साहब, आपके पास भगवान का दिया सब कुछ है, गाड़ी है, घोड़ा है, मकान है, कारखाना है, हम लोग भी गायत्री शक्तिपीठ की ओर से भगवान का, राष्ट्र का यह कार्य कर रहे हैं और चाहते हैं कि छात्रों का 10 पृष्ठों का यह परीक्षा परिणाम आपके अखबार में यदि प्रकाशित हो जाए, तो शायद आप अनुमान नहीं लगा सकेंगें कि आप देश

की कितनी बड़ी सेवा करेंगें ,यह आने वाला समय ही बताएगा।” अखबार के मालिक परीक्षा परिणाम प्रकाशित करने को तैयार हो गए।

दो दिन बाद दिनांक 12 अक्टूबर 1995 को जब भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का परिणाम प्रकाशित हुआ तो भोपाल सहित पूरे प्रदेश में एक प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। अखबार का लगभग आधा पेज 114 शालाओं एवं उनके मेरिटोरियस छात्रों के नामों से भरा पड़ा था। सभी पाठशालाओं के विद्यार्थी, गुरुजन एवं आम जनता परीक्षा परिणाम पढ़कर आश्चर्यचकित थे कि यह कौन सी नई परीक्षा है, जो छात्रों को संस्कृति से जोड़ने का प्रयास कर रही है; काश! हमारी पाठशाला भी इस परीक्षा में सम्मिलित हुई होती ।

उपर्युक्त विज्ञापन एवं तत्पश्चात् हुए पुरस्कार वितरण समारोह का परिणाम यह रहा कि वर्ष 1996 में जब

भोपाल गायत्री शक्तिपीठ की टीम परीक्षा के प्रचार के लिये पूरे प्रदेश में निकली, तो उसका व्यापक स्वागत हुआ और 1996 में परीक्षार्थियों की संख्या 7000 से बढ़कर मध्य प्रदेश में लगभग ढाई लाख तक पहुँच गई, जिसमें मिडिल स्कूलों के छात्रों को भी शामिल कर लिया गया था। वर्ष 1996 से प्रादेशिक विस्तार क्रम में भोपाल से डॉ. कर्मयोगी जी भी इस क्रम में सम्मिलित हो गए। जिससे प्रादेशिक विस्तार में और गति आयी और धीरे-धीरे परीक्षा को अन्य प्रदेशों में भी विस्तार मिलता गया।

शीघ्र ही शांतिकुंज के तत्वावधान में "भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा cell ", की मात्र चार सदस्यों की टीम जिसमें श्री आर. के. नायक, श्री मोहन सिंह भदौरिया, डॉ. पी. डी. गुप्ता, श्री जनार्दन मौर्य शामिल थे, legal cell के श्री विपिन सोरी, योगेन्द्र ठाकुर के साथ देशभर के सभी गायत्री

शक्तिपीठों, जोनल,उपजोनल परिजनों तथा सम्मानीय अध्यापकों के सहयोग से इस परीक्षा का विस्तार देश भर के लगभग 400 जिलों में हो गया। प्रत्येक प्रांत, जिला एवं तहसील स्तर पर समितियाँ गठित कर परीक्षा ढाँचे को एक व्यवस्थित स्वरूप दिया गया जिसके लिए नियमावली भी तैयार की गयी जिसे सभी संबंधित जिलों को भेजा गया।

वर्ष 2004 तक यह परीक्षा केवल दो ही वर्गों- जूनियर और सीनियर में कराई जाती थी। कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थी जूनियर वर्ग में तथा कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी सीनियर वर्ग में आते थे। जूनियर और सीनियर वर्ग की अलग पुस्तकें, अलग question bank के माध्यम से यह परीक्षा सम्पन्न होती थी। वर्ष 2005 में यह परीक्षा तीन वर्गों में कराई गयी। पहले वर्ग में कक्षा 6 और 8 के विद्यार्थी, दूसरे में कक्षा 9 और 10 के विद्यार्थी और तीसरे वर्ग में

कक्षा 11 और 12 के विद्यार्थी शामिल थे। वर्ष 2007 से कक्षा 5 को भी परीक्षा में सम्मिलित कर लिया गया और परिणाम स्वरुप विस्तार को देखते हुए चार वर्गों में वर्गीकृत करने की आवश्यकता पड़ी जो निम्नलिखित थे :

पहला वर्ग: कक्षा 5 और 6
दूसरा वर्ग : कक्षा 7 और 8
तीसरा वर्ग : कक्षा 9 और 10
चौथा वर्ग : कक्षा 11 और 12
पुस्तकों के लेखन एवं संपादन क्रम में भोपाल के डॉ. प्रेम भारती जी एवं उनकी टीम का प्रमुख योगदान रहा ।

ब्रह्मवर्चस द्वारा सम्पादित पुस्तक “पंडित श्रीराम शर्मा,दर्शन एवं दृष्टि” के 2012 एडिशन के अनुसार 2007 में 38 लाख विद्यार्थी सम्मिलित हुए। उस समय भारत के 22 राज्यों में

हिन्दी तथा अंगरेजी भाषा सहित आठ भाषाओं में यह परीक्षा सम्पन्न हो रही थी।

1994 से आरम्भ हुई यह परीक्षा 2012 में भारत के 3 करोड़ से अधिक परिवारों तक पहुँच चुकी थी। आज 2023 में इन पंक्तियों को लिखते समय भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का नंबर कईं करोड़ होगा, इसमें कोई शंका नहीं हो सकती।

परीक्षा में आकर्षण के प्रमुख बिन्दु:

परीक्षा में आकर्षण के प्रमुख बिन्दु छात्रों के लिए भागीदारी प्रमाण पत्र तथा तहसील, जिला से लेकर प्रांतीय स्तर तक के आकर्षक पुरस्कार, स्कालरशिप तथा नैतिक मूल्यों के एक से तीन दिवसीय शिविर रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर भी 2008 का 25 से 28 अप्रैल वाला चार दिवसीय “राष्ट्रीय मेरिटोरियस छात्र शिविर” देश भर के प्रांतीय मेरिटोरियस छात्रों के लिए

शांतिकुंज में विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। इसी क्रम में परम आदरणीय गुरुजनों के लिए भी देश में लगभग सभी प्रांतों के शिविर शांतिकुंज में आयोजित किए गए। ऐसे शिविर प्रतिवर्ष आयोजित किए जाते हैं । देश में सर्वाधिक छात्र संख्या बिठाने वाले जिले को शांतिकुंज द्वारा “विशेष शील्ड” तथा प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया जाता है। वर्ष 2005 से 2007 तक 3 वर्षों से यह गौरव राजस्थान के राजसमंद जिले को प्राप्त हुआ है, जहाँ वर्ष 2007 में जिले में लगभग 82 हजार छात्र सम्मिलित हुए । परीक्षा का Competition इतना बढ़ चुका है कि वर्ष 2008 में कुछ जिलों ने तो एक लाख से भी अधिक छात्रों को परीक्षा में बैठाने का संकल्प लेकर साहित्य वितरण भी प्रारंभ कर दिया है।

ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार की आदरणीय साधना बहिन जी दोनों पति- पत्नी 2005 से इस परीक्षा को करवा

रहे हैं और नंबर बढ़ता ही जा रहा है। 2022 में 2000 छात्रों ने परीक्षा दी और अपने विद्यालय के लिए परम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद की कामना की है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख तथा देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या इसे न केवल विस्तार दिया बल्कि प्रत्येक शाला में संस्कृति मंडलों की स्थापना हेतु प्रोत्साहन नीति अपनाई तथा यह भी घोषित किया कि प्रांतीय स्तर पर मेरिट में आए कक्षा 12वीं के छात्रों के लिए देव संस्कृति विश्वविद्यालय में प्राथमिकता के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा तथा अन्यान्य सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाएँगी। परम श्रद्धेय डॉ. साहब तथा परम आदरणीय शैल जीजी के आशीर्वाद से वर्ष 2008 में इस परीक्षा मं बैठने वाले छात्रों का लक्ष्य 50 लाख था और

गुरुदेव की जन्म शताब्दी वर्ष 2011 में इस संख्या को बढ़ाकर एक करोड़ के पार ले जाना कीतिमानी रहा।

कवि रवींद्र नाथ टैगोर की एक रूपांतरित कविता में लिखा है:

“साँध्य रवि (शाम को अस्त होते सूर्य) ने कहा मेरा काम लेगा कौन, रह गया सुनकर निरुत्तर जगत सारा मौन,एक माटी के दिए ने नम्रता के साथ,कहा जितना बन सकेगा मैं करूँगा नाथ।”

आइए! हम सब छोटे-छोटे माटी के दीपकों की तरह मिलकर परम पूज्य गुरुदेव की विचार क्रांति की इस मशाल को पूरे विश्व में पहुँचाएँ।

युगतीर्थ शांतिकुंज के गायत्री मंदिर प्रांगण में बड़े बड़े शब्दों में अंकित यजुर्वेद की उक्ति *“वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः”*

हर साधक को राष्ट्र के प्रति जागृत कराती है। इस उक्ति का हिंदी अनुवाद (हम पुरोहित राष्ट्र को जीवंत एवं जाग्रत बनाए रखेंगे) हमारे अंदर कुछ कर गुज़रने की जिज्ञासा उत्पन करता है। पुरोहित का अर्थ होता है जो इस पुर का हित करता है। प्राचीन भारत में शायद ऐसे व्यक्तियों को पुरोहित कहते थे, जो राष्ट्र के चरित्र, गौरव, मर्यादा, आत्मीयता, समृद्धि आदि की वृद्धि और उत्कर्ष की बात का दूरगामी हित समझकर उसकी प्राप्ति की व्यवस्था करते थे।

बॉलीवुड मूवी "जाग्रति" का एक टीचर के ऊपर फिल्माया गया बहुचर्चित गीत "हम लाएं हैं तूफ़ान से किश्ती निकाल के, इस देश को रखना मेरे बच्चो संभाल के" इस संकल्प को और भी परिपक्व करता है। इसी तरह का एक और गीत "कर चले हम फिदा जान वो तन साथियों, अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो" भी ऐसी ही भावना को दर्शाता है। जिन

साथियों ने फिल्म “हकीकत” देखी है उन्होंने सैनिकों की भावना को अपने अतःकरण में उतारने का प्रयास किया होगा कि भीषण परिस्थितिओं में सैनिक अपने प्राण त्यागते समय साथियों से देश के प्रति निष्ठा का संकल्प मांग रहे हैं। यही है हमारे गुरुदेव की वसीयत और विरासत। हमारे गुरु ने तो बनी बनाई recipe प्रदान कर दी है, हमें बहुत ही थोड़ा सा प्रयास करने की आवश्यकता है, बाकी वोह सब संभाल लेंगें। आप दो कदम उठाइए, गुरुदेव बाज़ू पकड़ने के लिए सामने खड़े हैं।

2023 के महाप्रयाण दिवस पर हम ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार के प्रत्येक समर्पित साथी को ऊपर दिए गए गीतों की भावना का संकल्प दोहराने और पूरा करने की प्रतिबद्धता के लिए प्रेरित कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि मनुष्य की गरिमा है कि जो श्रेष्ठ संकल्प लें उसे पूर्णता तक

पहुंचाएं। पूर्णाहुति इसीलिए दी जाती है। अभी 21 वीं सदी समाप्त होने में 77 वर्ष का समय बाकि है, जिस गति से परिवर्तन हो रहे हैं भारत के विश्वगुरु बनने में कोई संदेह नहीं है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का उद्देश्य:

भारतवर्ष अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक धारा के कारण जो हमारे ऋषियों, मुनियों द्वारा प्रतिपादित एवं अनुप्राणित थी कभी जगद्गुरु हुआ करता था। देशवासियों को पुनः आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विचारधारा में समाहित करने एवं विलुप्त होती देवसंस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए परम पूज्य गुरुदेव ने विचार क्रान्ति अभियान प्रारंभ किया। गुरुदेव द्वारा रचित साहित्य को घर-घर पहुँचाने, गायत्री अर्थात् सद्ज्ञान एवं यज्ञ अर्थात् सत्कर्म को चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार में लाने हेतु अगणित प्रयास किये जा रहे हैं। इन्हीं

प्रयासों की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण प्रयास “भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा” के माध्यम से विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों की पुनर्स्थापना करना है। “अध्यापक है युग निर्माता-छात्र राष्ट्र के भाग्य विधाता” की सोच लिये विद्यार्थियों में पुनः भारतीय संस्कृति का गौरव बोध कराना, वैज्ञानिक आध्यात्मवाद को प्रतिपादित करने एवं समस्त विश्व की पीड़ित, अशांत मानवता को जागृत करने तथा स्थाई शांति एवं खुशहाली के लिए यह परीक्षा मील का पत्थर सिद्ध हो रही है । विद्यार्थियों में दूरदर्शिता, विवेकशीलता एवं उच्चस्ततरीय संवेदनशीलता को जागृत करने, सत्य, प्रेम एवं न्याय का पाठ पढ़ाना, समय और प्रतिभा का उचित उपयोग सिखाना तथा जीवन जीने की कला में प्रवीणता लाने के लिए यह परीक्षा सार्थक है।

भारत राष्ट्र को जगद्‌गुरु होने का सम्मान, “संस्कृति सूत्रों” को जीवन में अपनाने से ही प्राप्त हुआ था। ऋषि आत्माओं एवं देव सत्ताओं ने अथक परिश्रम के उपरान्त जिन मूल्यों को राष्ट्र में प्रतिष्ठापित किया था, वे सनातन मूल्य, भारतीय संस्कृति की आज भी अमूल्य धरोहर हैं, जो अंतर्मन को परिष्कृत करके हमारे अन्दर प्रसुप्त पड़ी अनंत संभावनाओं को जाग्रत कर विराट स्तर तक पहुँचाते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव ने नई पीढ़ी को सही दिशा देने के लिए “शिक्षा और विद्या” के सार्थक समन्वय पर जोर दिया। मानवीय मूल्यों के विस्तार हेतु खड़ा किया गया विचार क्रान्ति अभियान वस्तुतः भारतीय संस्कृति के विद्या विस्तार का ही अभियान है। विद्यालयों में सभी किशोर किशोरियों में ज्ञान के साथ श्रेष्ठताओं और शाश्वत मूल्यों को विकसित कराने के लिए प्रयास करना ताकि वे स्वयं के मनोविकारों से

लड़ाई लड़ के जीवन के हर क्षेत्र से नीचता, निष्कृष्टता एवं अवाँछनीयताओं को दूर कर सकें।

युगदृष्टा गुरुदेव के अनुसार देश की छात्र पीढ़ी को (जो आने वाले कल का भविष्य है) पश्चिमी संस्कृति रूपी असुरता के चंगुल से निकालकर देव संस्कृति रूपी राजपथ (Super highway) पर चला देना ही हम सब का अभीष्ट होना चाहिए । भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा इसका सटीक आधार है। यदि परीक्षा के माध्यम से गाँव-नगरों में फैले विद्यालयों, छात्रों तथा अध्यापकों को संस्कृति सूत्रों से जोड़ा जा सके तो युग परिवर्तन का आधार बनने तथा इसे साकार होते देर नहीं लगेगी।

शिक्षकों ने यदि यह मोर्चा संभाला तो इक्कीसवीं सदी का भारत होगा, अपने खोए हुये गौरव को प्राप्त करता हुआ “नया भारत” होगा जिसमें छात्र-छात्राओं में नैतिक,

सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए भारतीय ज्ञान परीक्षा के माध्यम से नया चिन्तन अवश्य ही देगा। इस परीक्षा के माध्यम से छात्र-छात्राओं के जीवन में उत्कृष्टता लाने के लिए विद्यालयों में संस्कृति मण्डलों की स्थापना का कार्यक्रम भी जुड़ा हुआ है। एक से तीन दिवसीय शिविरों के आयोजन से विद्यालय, छात्र, अध्यापक, अभिभावक, मिलजुल कर युग परिवर्तन से सम्बन्धित सप्त आंदोलनों से भी जुड़ेंगे।

परीक्षा का संक्षिप्त इतिहास:

वर्ष 1994 में भोपाल में यह परीक्षा केवल 2000 विद्यार्थियों की भागीदारी प्रारंभ हुई। वर्ष 1996-97 से अन्य प्रदेशों में भी यह परीक्षा प्रारंभ हुई तथा छात्र संख्या बढ़ते-बढ़ते वर्ष 2008 में 40 लाख विद्यार्थी इस परीक्षा से लाभान्वित हुए । आज देश की आठ भाषाओं में 20 राज्यों

एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में इसका . आयोजन किया जाता है। लगभग 400 जिलों के एक लाख विद्यालय इस विधा से जुड़े हैं।

परीक्षा का संचालन, गुरुसत्ता के सूक्ष्म संरक्षण एवं प्रेरणा से श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्डया के कुशल मार्गदर्शन में गायत्री तीर्थ शान्तिकुंज हरिद्वार (उत्तराखण्ड) के भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ द्वारा किया जा रहा है। इसका प्रारंभ दो वर्गों में किया गया तत्पश्चात् तीन व चार वर्गों की परीक्षाएँ आयोजित की गई, लेकिन 2009 से पांचवीं से बारहवीं तक की आठ कक्षाओं के आठ sections में यह परीक्षा कराई जा रही है। यह परीक्षा प्रायः दिसम्बर में सम्पन्न होती है तथा परिणाम फरवरी तक घोषित होते हैं। परीक्षा के दो माह पूर्व विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री (पुस्तक व प्रश्नबैंक) उपलब्ध करा दी जाती है ताकि अधिक

से अधिक विद्यार्थियों को जानकारी का लाभ मिल सके। मूल्यांकन Computerized शीट का प्रयोग करके किया जाता है। समय- समय पर सम्बंधित शिक्षकों, छात्रों तथा परिजनों के शिविर राज्यवार शांतिकुंज में आयोजित किये जाते हैं। इन शिविरों में परम पूज्य गुरुदेव के समाजोत्थान के विचारों एवं भारतीय संस्कृति के उद्देश्यों से परिचित कराया जाता है। परीक्षा सहयोग राशि के रूप में कक्षा पाँच एवं छः के विद्यार्थियों से मात्र 12 रु. तथा कक्षा सात से बारह तक 15 रु. प्रति छात्र लिये जाते हैं। इस राशि से अध्ययन सामग्री, प्रश्न पत्र, प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार आदि की व्यवस्था की जाती है। तहसील, जिला एवं राज्य स्तर पर Merit list में आने वाले सभी स्तरों के छात्र- छात्राओं को विशेष रूप से पुरस्कृत किया जाता है। प्रथम आने वाले विद्यार्थियों को शांतिकुंज की ओर से 10 माह के लिए 200 रुपये प्रतिमाह

छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है तथा ऐसे विद्यार्थिओं को कक्षा बारहवीं पास करने के बाद देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज में प्राथमिकता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। Merit list में आने वाले विद्यार्थियों के लिए जिला, राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर एक से तीन दिवसीय व्यक्तित्व परिष्कार के विशेष शिविर आयोजित किये जाते हैं।

परीक्षा के अतिरिक्त भी विद्यालयों में संस्कृति मण्डलों के गठन के साथ-साथ जन्म दिवस मनाना, सामूहिक श्रमदान, वृक्षारोपण, दीवारों पर महापुरुषों एवं संतों के अमृत संदेशों के पोस्टर लगाना आदि सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन किया जाता है। परीक्षा में ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं, जिससे मानसिक तीव्रता के साथ भावनाशीलता एवं आध्यात्मिकता का भी विकास हो । गायत्री परिवार के परिजन एवं संस्कृतिनिष्ठ अधिकारियों / अध्यापकों/परिजनों

के त्याग एवं श्रम के फलस्वरूप यह परीक्षा सफलता के उच्चतम सोपानों तक पहुँच रही है।

परमपूज्य गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष 2011-12 में कई करोड़ विद्यार्थियों एवं उनके परिवारों तक पहुँचने का प्रयास किया गया। आज 2023 में इन पंक्तियों को लिखते समय यह संख्या कहीं अधिक हो चुकी है।

हम सभी का कर्तव्य बनता है कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को विस्तार देकर ऋषि प्रणीत संस्कार एवं जीवन मूल्यों पर आधारित विचारों को अध्यापकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग तक गहराई से प्रविष्ट कराने का पुरुषार्थ करें।

परीक्षा के लिए प्रेरक पुस्तकें :

समय का सदुपयोग करें, सफलता के तीन साधन, शिष्टाचार और सहयोग, वेशभूषा शालीन रखें, श्रम है सुख का केतु सदाचरण और मर्यादा पालन, बाल निर्माण कहानियाँ (भाग-1 से 16 तक) देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर (भाग-1 से 4), भारतीय संस्कृति के संरक्षक – उद्धारक(भाग 1-6), सद्विचार, सत्कार्य एवं सत्साहस की घटनाएँ (भाग 1-2) शिष्ट बनें सज्जन कलाएँ, सफलता के सात सूत्र – साधन, बालकों का भावनात्मक विकास, बड़े आदमी नहीं महामानव बनें, सम्मान के पात्र हमारे वयोवृद्ध, प्रज्ञायोग व्यायाम, ब्रह्मचर्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता, मनोबल के धनी व्यक्तित्व (भाग 1-2)

इन पुस्तकों के माध्यम से परीक्षा में सफलता के साथ- साथ निम्लिखित उपलब्धियां स्वयं ही आती जायेंगीं:

बढ़ेगी सुघड़ व्यक्तित्व के प्रति जागरूकता, होगा मानवीय गौरव का बोध, परिमार्जित होंगी अभिरुचियाँ, प्रखर होंगे विचार, जागेगा कर्त्तव्य बोध, छूटेंगे कुसंग और दुर्व्यसन, घटेगा वर्ग विद्वेष, जाग्रत् होगा मानवीय सद्भाव, बदलेगा जीवन के प्रति दृष्टिकोण, परिष्कृत होंगी भावनाएँ, सुधरेंगे आचरण, कम होंगे तनाव और अवसाद, विकसित होगा आत्मविश्वास, पनपेगा राष्ट्र गौरव, समग्र बनेगा व्यक्तित्व |